आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2014-2016

मासिक पत्रिका

अजायब ✵ बानी

वर्ष : तेरहवां | अंक : ग्यारहवां | मार्च-2016

4

महरम होय सो जाने

(एक शब्द)

5

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

गुरु ही शिष्य को ढूंढ़ता है

(स्वामी जी महाराज की बानी)

बैंगलोर

29

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

अमृतवेला

34

सतसंगों के कार्यक्रम की जानकारी

धन्य अजायब

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। फोन- 099 50 55 66 71 (राजस्थान) 098 71 50 19 99(दिल्ली)

विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया फोन-096 67 23 33 04, 099 28 92 53 04

उप सम्पादिका : नंदिनी सहयोग : परमजीत सिंह व जस्सी

e-mail : dhanajaibs@gmail.com | Website :www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 मार्च 2016 –168 मूल्य – पाँच रुपये

महरम होऐ सो जाने

महरम होऐ, सो जाने, साधो,
ऐसा देश हमारा, साधो, ऐसा देश हमारा, (2)

1. वेद–कतेब, पार नहीं पावत, (2)
कहन–सुनन से न्यारा, साधो, ऐसा देश .....

2. जात वर्ण कुल, क्रिया नाहीं, (2)
संध्या नेम उचारा, साधो, ऐसा देश .....

3. बिन जल बूँद, परत यहाँ भारी, (2)
नहीं मीठा नहीं खारा, साधो, ऐसा देश .....

4. सुन्न महल में, नौबत वाजे, (2)
किंगरी बीन सितारा, साधो, ऐसा देश .....

5. बिन बादल यहाँ, बिजली चमके, (2)
बिन सूरज उजियारा, साधो, ऐसा देश .....

6. बिना सीप यहाँ, मोती उपजे, (2)
बिन सुर शब्द उचारा, साधो, ऐसा देश .....

7. जोत ले जाए, ब्रह्म यहाँ दरसे, (2)
आगे अगम अपारा, साधो, ऐसा देश .....

8. कहो 'कबीर' वहाँ, रहन हमारी, (2)
बूझे गुरु मुख्तदारा, साधो, ऐसा देश .....

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

गुरु ही शिष्य को ढूंढता है

स्वामी जी महाराज की बानी | DVD -91 | बैंगलोर

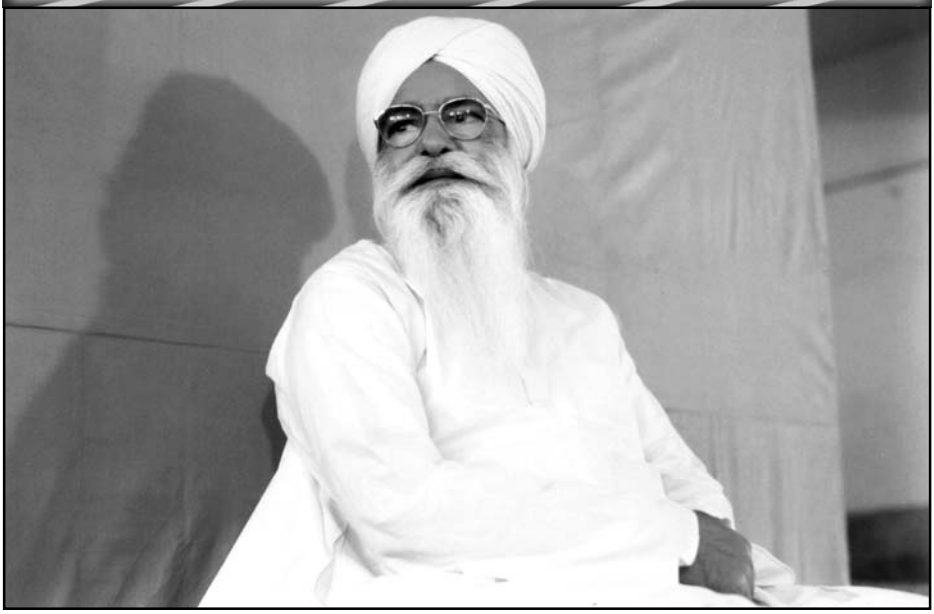

मैं दयालु सतगुरु बाबा सावन सिंह जी का धन्यवाद करता हूँ। आप कलयुग में अपना वह धाम छोड़कर आए जहाँ मौत-पैदाईश नहीं दुख नहीं, वह शान्ति का देश है। कबीर साहब कहते हैं:

महरम होय सो जाने साधो ऐसा देश हमारा।

जो साधु उस देश में पहुँच गए हैं उन मालिक के प्यारों को परमात्मा हुक्म देता है कि संसार में आत्माएं तप रही हैं आप उन आत्माओं को समझाकर मेरे साथ जोड़ें, मेरे पास लाएं। वह सच्चखंड के सुख को छोड़कर हमारी खातिर तन धारण करके आता है। यह सन्तों की मौज है कि वह चाहें तो लकड़ी से भी काम ले सकते हैं! उनके लिए दूर-नज़दीक का कोई फर्क नहीं पड़ता।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जो प्रेमी यह कहते हैं कि हम सन्तों के पास जाते हैं, हम नाम जपते हैं या हमने नाम लिया है, ऐसा हम तब तक ही कहते हैं जब तक हमारी अंदर की आँख नहीं खुलती। जीव की क्या ताकत है? जब अंदर की आँख खुल जाती है फिर पता लगता है कि हम सतसंग में नहीं जाते थे, हम सन्तों के पास नहीं जा सकते थे यह तो सन्तों ने ही हमें अपने पास खींचा और अपने सतसंग का प्यार बख्शा।''

बाबा सावन सिंह जी महान थे, आपकी महिमा बयान नहीं की जा सकती। आपने दया करके इस गरीब आत्मा को बचपन में ही अपना स्वरूप दिखाया। मैं जिंदगी भर उस स्वरूप को अपनी आँखों से नहीं निकाल सका। मैंने एक भजन में बताया हैः

लक्खां शक्लां तकियां अखिंया ने कोई नज़र मेरी विच खुबदी ना।

मुझे तेरी शक्ल जैसा कोई और दिखाई ही नहीं दिया। यह आपकी दया और महिमा थी, उस दया को कैसे बयान कर सकते हैं? आपने अपनी दया करके दक्षिण में बाबा सोमनाथ की सेवा लगाई कि आप यहाँ आत्माओं को 'शब्द-नाम' के साथ जोड़ें। आप जिसे 'शब्द-नाम' के साथ जोड़ेंगे मैं उसकी संभाल करूंगा।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि सतगुरु अपने जीवनकाल में जिसे कह जाएं कि तू जिसे नाम देगा मैं उसकी संभाल करूंगा वह उसकी जिम्मेवारी उठाते हैं। इसी तरह बलूचिस्तानी मस्ताना की ड्यूटी हमारे राजस्थान के थोड़े से इलाके बागड़ में लगाई थी। बलूचिस्तानी मस्ताना ने महाराज सावन के खूब गुण गाए। इसी तरह हुजूर कृपाल की सारे संसार में ड्यूटी लगाई। सन्तों को पता है किससे कितना काम लेना है किस तरीके से काम लेना है? यह गुरु शिष्य का मामला है।

इसी तरह महाराज कृपाल ने सारे संसार के अंदर चाहे कोई समुद्र में या पहाड़ की चोटी में बैठा था वहाँ जाकर सावन का नाम जपाया, सावन का नाम रोशन किया। यह उन्हीं की दया और बड़ी भारी महिमा थी जिसे बयान नहीं किया जा सकता। आज हम उसी महाराज सावन की दया से उनके प्यार में इकट्ठे हुए हैं अगर वह हमारे ऊपर दया न करते अपना प्यार न बख्शते तो हम किस तरह इकट्ठे हो सकते थे?

आपको पता है कि कलयुग में जीवों के ख्याल कितने फैल चुके हैं। हम एक घंटा भी चौंकड़ी लगाकर नहीं बैठ सकते, कितना हिलते-जुलते हैं हमारा ख्याल बाहर दौड़ता है। हम एक सैकिंड भी टिकने को तैयार नहीं। हमारे पैरों में घर-बार के बंधन पड़े हुए हैं। हम अपने कर्मों की वजह से ही लेन-देन में फँसे हुए हैं। उन्हीं की दया से आज हम महान सतगुरु की याद में बैठे हैं। हमें उनकी दया से फायदा उठाना चाहिए।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं बेशक आप कितने भी पढ़े-लिखे हैं कितने बड़े तैराक हैं। आप समुद्र-दरिया तैरकर पार कर सकते हैं फिर भी आपको किसी न किसी तैरने वाले आदमी के तजुर्बे से फायदा उठाना पड़ेगा क्योंकि समुद्र की लहरों में, दरिया की घुम्मड़घेरियों में बड़े-बड़े तैराक डूब जाते हैं। इसी तरह यह संसार समुद्र है इसमें बहुत लहरें उठ रही हैं। कहीं काम की, कहीं क्रोध की और कहीं मान-बड़ाई की लहरें उठ रही हैं। इन घुम्मड़घेरियों से निकलना आसान नहीं। कोई बहादुर आदमी ही इन घुम्मड़घेरियों से निकल सकता है, मन का मुकाबला कर सकता है।

हमें भी चाहिए कि हम किसी ऐसे तैराक की शरण में जाएं जो हमें इस संसार की घुम्मड़घेरियों से बचाकर ले जा सके।

हुजूर कहा करते थे, ''पढ़ा हुआ ही पढ़ा सकता है, पहलवान ही पहलवानी सिखा सकता है।''

इसी तरह भगवान ने नारद को मन कहकर बयान किया है। नारद शिरोमणि भक्त था। इतिहास में आता है कि नारद ने साठ हजार साल तप किया। नारद जी तप करके ब्रह्मा के पास गए तो ब्रह्मा जी ने कहा, ''आओ ऋषि जी! बैठो क्या हाल है? आपके दर्शन काफी समय बाद हुए हैं।'' हम बाहर जितने भी कर्मकांड करते हैं उससे मन को शान्ति नहीं आती बल्कि अहंकार आ जाता है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थेः

किया कराया सब गया जब आया अहंकार।

ब्रह्मा जी ने सोचा कि इसने तप तो कर लिया लेकिन इसका अहंकार दूर नहीं हुआ। फिर नारद शिव जी के पास गए। शिव जी ने भी नारद जी का काफी आदर-सत्कार किया और कहा, ''भक्त जी बैठो! काफी समय से आपके दर्शन नहीं हुए।'' नारद जी ने कहा, ''मैंने बहुत तप किया है, मन इन्द्रियों पर काबू पा लिया है अब मुझे आप जैसे देवताओं के पास आने की क्या जरूरत है? मेरी पहुँच स्वर्गों तक है।'' शिवजी ने सोचा कि इसके अंदर बहुत अहंकार है यह विष्णु भगवान के पास जाकर भी इस तरह के ख्याल जाहिर न करे?

जब नारद जी भगवान विष्णु के पास गए तो विष्णु जी ने कहा, ''आओ भक्त जी बैठो! क्या हाल है? आप काफी समय बाद आए हैं।'' नारद जी ने कहा, ''मैंने मन इन्द्रियों को दमन कर लिया है, काम के ऊपर काबू पा लिया है। मैं स्वर्गों बैकुंठो में जाता हूँ अब मुझे आपके पास आने की क्या जरूरत है?'' विष्णु भगवान

ने सोचा! यह अहंकार में आकर अपने तप को खराब कर रहा है, यह बहा जा रहा है इसे बचाना बहुत जरूरी है।

विष्णु जी ने माया को इशारा किया कि जब नारद आए तो एक नगर रच देना और वहाँ यह कारोबार करना। माया ने कोई समय नहीं लगाया एक नगर रच दिया। उस नगर के राजा ने अपनी लड़की का स्वयंबर रचा दिया। नारद जी उस राजा के महल में चले गए। राजा ने उन्हें ऋषि जानकर उनका बहुत आदर भाव किया और कहा, ''मेरी लड़की की शादी है आप भी दर्शन दें।'' नारद जी ने कहा कि देखें लड़की कैसी है? जब लड़की देखने गए तो लड़की की बाजू पर लिखा हुआ था कि जो इसके साथ शादी करेगा वह सदा के लिए अमर हो जाएगा।

नारद जी पढ़े-लिखे अच्छे पंडित थे जब उन्होंने पढ़ा तो उनके दिल में फौरन ख्याल आया कि एक पंथ दो काज। शादी हो जाएगी और अमर भी हो जाएंगे। मन ने फौरन अंदर यह ख्याल भर दिया कि यह तो तप करने से भी नहीं मिला था, यह तो बहुत आसान है। नारद जी एकदम विष्णु भगवान के पास चले गए और कहा, ''आप मुझे अपना रूप दें ताकि राजा की लड़की मुझे पसंद करके मेरे साथ ही शादी करे।''

विष्णु भगवान ने सोचा बेशक नारद नाराज ही क्यों न हो! भक्त को बचाना भगवान का काम होता है। विष्णु भगवान ने नारद को बंदर का मुँह दे दिया। नारद बार-बार उस लड़की को अपना मुँह दिखाए कि यह मुझे पसंद करे क्योंकि मैं ही सुंदर हूँ। हम सब जानते हैं कि बदशक्ल की तरफ कौन देखता है? वहाँ शिव के दो गण बैठे थे उन्होंने नारद से कहा, ''भले लोग! तू पानी में जाकर अपना मुँह देख कि तेरी शक्ल कैसी है?'' जब नारद ने अपनी

शक्ल देखी तो उसे बहुत दुख हुआ और गुस्सा आया। वह विष्णु भगवान के पास जाकर बोला, ''तूने मेरे साथ मजाक किया है।''

विष्णु भगवान ने कहा, ''नारद! बेशक तू मुझे कुछ भी कह ले लेकिन मुझे भक्त प्यारे हैं। मैंने तेरा अहंकार दूर करना था।'' हमारे और परमात्मा के दरम्यान मन की रुकावट है। मन हमारे अंदर अहंकार पैदा करता है और हमारे अंदर दीवार बनकर बैठ जाता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

हौमें दीर्घ रोग है दारु भी इस माहे।
कृपा करे जे आपणी गुरु का शब्द कमाहे।।

हौमें, अहंकार बहुत बड़ा लाइलाज रोग है लेकिन परमात्मा ने दया करके अपनी दवाई भी इसमें रखी है। परमात्मा जिन्हें बचाना चाहता है अपने साथ मिलाना चाहता है उन्हें सन्त-महात्माओं और गुरुओं की संगत में भेजता है। सन्त-महात्मा हमारी सुरत को 'शब्द-नाम' के साथ जोड़ देते हैं। हम सन्त-महात्माओं की दया से भवसागर की लहरों से पार हो जाते हैं। सन्त-महात्माओं की संगत और सोहबत दुर्लभ रतन है।

दुनिया के अंदर प्राप्त करने वाली वस्तु गुरु की शरण है। मौत के समय माता-पिता, बहन-भाई किसी ने भी हमारे साथ नहीं जाना। हम जायदादें बनाकर इनका अहंकार करते हैं या हम कौम मजहब की लीडरी हासिल कर लेते हैं कि हमारी तरह कौन है?

महात्मा बताते हैं कि मौत के वक्त इनमें से कोई हमारी मदद नहीं कर सकता किसी ने हमारे साथ नहीं जाना। जब मौत आती है बच्चे पास ही बैठे होते हैं लेकिन वे हमें मौत के फरिश्ते से नहीं बचा सकते। अगर बादशाह है संतरी हाथों में राईफले लेकर खड़े

हैं काल का पता नहीं कि वह किस समय महल में आ जाता है? अंदर ही जान को कब्जे में कर लेता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

कच्चड़यां सो तोड़ दोस्ती ढूंढ सज्जण सन्त पकयां।

दुनिया के सारे रिश्ते-नाते अपनी अपनी गरज के हैं। आपके आगे स्वामी जी महाराज का शब्द रखा जा रहा हैः

सतगुरु खोजो री प्यारी। जगत में दुर्लभ रतन यही।।

सभी सन्त-महात्मा यही होका देते आए हैं कि सतगुरु और नाम दुर्लभ है। नाम उत्तम है, गुरु के बिना नाम नहीं मिलता और नाम के बिना मुक्ति नहीं।

हमें पता ही है कि हमारे वैज्ञानिकों ने दुनिया में बड़ी खोज की है जिससे आम दुनिया फायदा उठा रही है। हम कितने लम्बे सफर जो महीनों में पूरे करते थे अब वह सफर घंटो में ही पूरा कर लेते हैं। हम इसके अलावा साईंस की खोजों का और भी फायदा उठा रहे हैं लेकिन इंसान ने एक ऐसी भी खोज की है जिससे वह अपनी बर्बादी तैयार किए बैठा है। इंसान ने एटम बम बनाए हुए है जिनके पास एटम बम के भंडार हैं वे यह मान रखते हैं कि हम जब चाहे दुनिया को तबाह कर सकते हैं। यह हमारी ही खोज का नतीजा है कि हमने खोज करके ही इन चीज़ो को तैयार किया है।

महात्मा हमें बताते हैं कि हम अपने अंदर जाकर 'शब्द-नाम' की खोज करें, प्रभु परमात्मा की खोज करें वह परमात्मा हमारे अंदर बैठा है। हम खुद भी शान्त होंगे जो हमारे आस-पास बैठे होंगे उन्हें भी शान्ति पहुँचाने की कोशिश करेंगे। किसी का दिल दुखाने से बड़ा कोई पाप नहीं और किसी को शान्ति पहुँचाने से बड़ा कोई धर्म नहीं।

जिन पर मेहर दया सतगुरु की। उनको दर्श दई ।।

मैंने सतसंग के शुरू में ही कहा था कि हम यह मान रखते हैं कि हम सन्तों के पास जाते हैं उनके दर्शन करते हैं। प्यारेयो! जिन महात्माओं की आँखे खुली हैं वे कहते हैं कि वह आप ही दर्शन का इंतजाम करते हैं अगर वह खुद इंतजाम न करें तो हम उनके दर्शन कर ही नहीं सकते।

मैं अपने मुत्तलिक बताया करता हूँ कि मैं किस तरह बाबा सावन सिंह जी की शरण में गया? मैं आर्मी में नौकरी करता था पेशावर के नज़दीक नशहरा छावनी है। वहाँ हमारी आर्मी में पठान दातुन बेचने के लिए आते थे। सुबह दो पठान दातुन भी बेच रहे थे और आपस में प्यार से बातें भी कर रहे थे कि पंजाब से कोई महात्मा आया है जिसकी सूरत बहुत ही मनमोहनी है। उनके अंदर की ताकत के मुत्तलिक तो कुछ बयान नहीं कर सकते पर उस महात्मा का स्वरूप और उनकी दाढ़ी बहुत ही प्यार भरी है। देखने में ऐसा लगता है कि गुरु नानक ही संसार में चलकर आ गए हैं।

वहाँ और भी बहुत से आदमी दातुन ले रहे थे किसी ने सवाल नहीं किया इस गरीब आत्मा ने ही सवाल किया कि वह महात्मा कहाँ है और उनसे किस तरह मिल सकते हैं? उन पठानों ने बताया कि वह महात्मा पेशावर आए हुए हैं। वह आमतौर पर आर्मी वालों से जल्दी ही मिल लेते हैं। बाबा सावन सिंह जी ने आर्मी में नौकरी की हुई थी उन्हें पता था कि आर्मी वालो को टाइम बहुत मुश्किल से मिलता है। आप आर्मी वालों के समय की बहुत कद्र करते थे।

हमारा कमांडर धार्मिक ख्यालों का था उसे साधु-सन्तों की खोज रहती थी। मैंने अपने कमांडर से जिक्र किया कि आज पठानों

के मुँह से इस तरह के महात्मा की प्रशंसा सुनी है। कितना अच्छा होगा अगर आप इंतजाम कर सकें क्योंकि आप मालिक हैं हम आपके नीचे हैं। हमारे कमांडर ने कहा, ''महात्मा के दर्शन करने के लिए हम सब एक जैसे हैं। यह तो अपनी-अपनी आत्मा का सवाल है।'' हम पेशावर जाकर बाबा सावन सिंह जी से मिले। जब मैंने उन्हें बताया कि बाबा जी! पठान लोग आपको बहुत सुंदर कहते हैं। आपने कहा, ''सन्त सुंदर बनकर तो आते हैं लेकिन जीव भाग्य से ही उन्हें पहचान सकता है, उनसे प्यार कर सकता है।''

इसी तरह मैं महाराज कृपाल के मुत्तलिक बताया करता हूँ कि मुझे जिंदगी में न तो कोई उनकी प्रशंसा करने वाला मिला और न ही कोई उनकी निन्दा करने वाला मिला। आप खुद ही दया करके पांच सौ किलोमीटर चलकर गए। आपने मेरे घर अपना एक नुमांईदा भेजा जिसने आकर मुझसे कहा कि आप घर पर रहें महाराज जी ने आपसे मिलने के लिए आना है। जब उस प्रेमी ने कहा कि महाराज जी आपसे मिलना चाहते हैं तो मेरे दिल की खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा।

इससे छह महीने पहले दिमाग में ऐसा विचार उठा कि मकान बनाया जाए महाराज जी ने आना है। जिन्होंने रात-दिन मेरे साथ मकान बनाने की सेवा की, मुझे सहयोग दिया वे लोग अभी जिन्दा हैं और इस सतसंग में भी हैं। मकान का काम दिन-रात होता और रात में गैस जलाकर काम करते। जब वह मकान बना उस समय मैं यह नहीं बता सकता था कि वह महाराज कौन है और कहाँ से आएंगे? जब वह बना बनाया छह फुट लम्बा महाराज आया वह चलता फिरता भगवान था जो बोल सकता ओर बता सकता था, वह भगवान इस आत्मा के पास पहुँचा।

इसी तरह महाराज सावन सिंह जी बाबा जयमल सिंह के पास नहीं गए थे। बाबा जयमल सिंह जी ने बहुत लम्बा रास्ता तय करके कोहमरी के पहाड़ो पर महाराज सावन को ढूंढा और उन्हें नाम दिया। महाराज सावन सिंह जी सतसंग में बताया करते थे कि जब बाबा जयमल सिंह जी और बीबी रूक्को उनके पास से गुजरे उस समय आप सड़क की देखभाल कर रहे थे। जयमल सिंह जी ने बीबी रूक्को को मेरी तरफ इशारा करके बताया कि हम इस सरदार की खातिर यहाँ आए हैं। बीबी रूक्को ने कहा कि इन्होंने तो आपको सत श्री अकाल भी नहीं बोली। जयमल सिंह जी ने कहा, ''इन्हें पता नहीं, आज से चौथे दिन ये सतसंग में आ जाएगा।'' आप वाक्य ही चौथे दिन सतसंग में चले गए।

महाराज सावन सिंह जी को आपके किसी दोस्त ने कहा कि आप आमतौर पर साधु-सन्तों को खोजते रहते हैं उनसे मिलकर खुश होते हैं। पंजाब से एक साधु आए हैं अगर आप उनका सतसंग सुनें तो बहुत अच्छा है। वहाँ एक वेदान्ती योगी था। उस योगी ने कहा, ''वे नास्तिक लोग हैं। उनके पास ऐसी करामात है कि वे सिर के ऊपर बाजा रख देते हैं और आवाज अंदर से आती है।'' महाराज सावन ने हँसकर कहा, ''मैं एक इंजीनियर हूँ। मैंने आज तक ऐसा बाजा नहीं देखा कि उसे सिर के ऊपर रखने पर अंदर से आवाज आए।''

इसी तरह आप महाराज कृपाल की हिस्ट्री पढ़कर देखें! आपको सावन सिंह जी के मिलने से सात साल पहले ही अंदर दर्शन होते रहे। जिन महात्माओं का जातिय तजुर्बा है वे हमें बताते हैं कि हम गुरु को नहीं पकड़ सकते। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जीव अंधा है परमात्मा सुजाखा है। जब तक वह खुद आवाज

लगाकर अपनी अंगुली हमारे हाथ में नहीं दे देता हम उसकी अंगुली नहीं पकड़ सकते क्योंकि हम आँखों से अंधे हैं। हमें कुछ दिखाई नहीं देता।''

मैं अपने मुत्तलिक बताया करता हूँ कि मुझे एक साल पहले महाराज कृपाल स्वामी जी के रूप में दिखाई देते थे थोड़ा अरसा पहले ही अपने सही रूप में आने लगे। जब महाराज कृपाल मेरे आश्रम में आए तब मैंने विनती की कि महाराज जी! आप जब पहले मिलते थे तब आपके सिर के बाल कटे हुए थे दाढ़ी थी लवें कटी हुई थी। मैंने आपको पूरी फोटो बताई लेकिन सन्त अपने आपको क्रेडिट नहीं देते। आपने कहा, ''हाँ! सब हुजूर की ही दया है। मैं तो जैसा हूँ तेरे पास बैठा हूँ।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

भागहीन गुरु न मिले निकट बैठयां नित पास।

अगर हमारे भाग्य में नहीं बेशक महात्मा हमारे घर में ही क्यों न पैदा हो जाएं हमारे पड़ोस में ही रहने लग जाएं हमें यकीन ही नहीं आएगा कि यह पूरा महात्मा हैं। दूर के लोग फायदा उठा लेते हैं और पास के रह जाते हैं।

आप गुरु नानकदेव जी की हिस्ट्री पढ़कर तसल्ली कर सकते हैं कि उनके नगर के सबसे धनी सरदार राय बलार ने आपको पहचाना भगवान समझा। बहन नानकी ने भी आपको पहचाना कि मेरा भाई परमात्मा रूप है लेकिन माता-पिता हमेशा ही आपको थप्पड़ों से पीटते रहे कि यह कारोबार नहीं करता, आपका दिल दुनिया में लगाने के लिए कितने ही उपाय किए।

इसी तरह स्वामी जी महाराज कहते हैं कि जिनके ऊपर परमात्मा दया-मेहर करता है उन्हें ही महात्मा के दर्शन होते हैं,

उन्हें ही भरोसा आता है। यह बहुत ठंडे दिल से सोचने वाली बात है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

सतगुरु नू सबको देखदा जित्ता है संसार।
डिट्ठया मुक्त न होवी जिच्चर शब्द न धरे प्यार।।

सतगुरु को सारे ही देखते हैं। सतगुरु को पशु-पक्षी भी देखते हैं उन्हें भी देखने का फल मिलता है वे मनुष्य जन्म से नीचे नहीं जाते, मनुष्य जन्म के अधिकारी बन जाते हैं लेकिन फिर भी मुक्ति नाम में है। उन्हें एक बार मौका जरूर मिलता है अगर अगले जन्म में नाम ले लिया तो उसी जन्म में मुक्ति है।

हम जब तक नाम लेकर नाम की कमाई नहीं करते, सूरज चंद्रमा सितारे पार करके गुरु स्वरूप को अंदर प्रकट नहीं करते उस समय तक हम अपने जीवन काल में यह नहीं कह सकते कि हम मुक्त हैं। जो कमाई करके अपनी आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीनों पर्दे उतारकर अंदर जाकर गुरु स्वरूप को प्रकट कर लेते हैं वही यह कह सकते हैं कि हम मुक्त हैं। जिस तरह बनिए की बही में हमारा कोई हिसाब ही नहीं तो हम कह सकते हैं कि हमारी मर्जी है हम सामान लेकर आएं या न आएं!

जब तक हम अंदर जाकर गुरु स्वरूप को प्रकट नहीं करते तब तक कभी हम गुरु पर भरोसा करते हैं कभी नहीं करते। कभी कुछ ख्याल करते हैं कभी कुछ ख्याल करते हैं और हम डाँवाडोल रहते हैं। उस समय तक हम गंगा जाते हैं तो गंगाराम बनते हैं यमुना जाते हैं तो यमुना दास बन जाते हैं।

सावन का वाक है आप कहते थे अगर कोई अपनी आँखों से देख लेता है कि यह बैल है फिर सारी दुनिया यह कहे कि यह बैल नही भैंस है वह कभी भी मानने के लिए तैयार नहीं होगा क्योंकि

उसने अपनी आँखों से देख लिया है कि यह बैल है। जब हम एक बार अंदर जाकर देख लेते हैं कि यह पूर्ण महात्मा हैं, मालिक रूप हैं यह रोज मुझे अंदर लेकर जाते हैं फिर क्या शक रह जाता है, क्या फिर हमारा ख्याल डोल सकता है?

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''ऐसे महात्मा दया करके ही हमें दर्शन देते हैं।''

दर्श पाय सतलोक सिधारी। सत्तनाम पद कीन सही।।

सन्त-महात्माओं के दर्शन का यह फायदा है कि हमारी आत्मा जहाँ से बिछड़कर आई है वे आत्मा को उस जगह पहुँचा देते हैं, हमारा इश्क सच्चखंड का बना देते हैं। वे बता देते हैं कि प्यारेया! यह तेरा देश है, आत्मा यहाँ की रहने वाली है। गुरु हमें कभी भी अंधविश्वास नहीं देते। आप कमाई करके अंदर जाकर देखें! आपके लिए आपका गुरु क्या करता है? अगर हम बाहर ही हाय! हाय! करते रहें तो इसमें गुरु का क्या कसूर है?

बाबा सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जो लोग यह कहते हैं कि गुरु अपने आप ले जाएगा यह उनका मन उनके साथ धोखा कर रहा है। जो बच्चा बाप के ऊपर निर्भर रहे उसे उसके दोस्त भी ताना मारते हैं कि यह कितना नालायक है, यह अपने पिता पर बोझ बना हुआ है।'' इसी तरह जो शिष्य गुरु के ऊपर बोझ बनता है सतसंगी भी उसे कहते हैं कि इसने अपना सुधार नहीं किया यह गुरु पर बोझ बना हुआ है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''प्यारेयो! आप मेरे लिए भजन करके लाएं मुझे भजन की बहुत जरूरत है।'' सन्त-महात्मा अपने सेवको से भजन की ही आशा रखते हैं।

आप प्यार से कहते हैं, ''स्कूल तक जाना बच्चे का फर्ज है आगे पढ़ाना टीचर का काम है। हमारा स्कूल इन दोनों आँखों के दरम्यान है। हमारा सफर पैरों के तलों से शुरू होता है। जब हम अपने ख्याल को नौं द्वारों में से निकालकर आँखों के पीछे आते हैं यहाँ गुरु पहले ही हमारी इंतजार में खड़ा होता है।''

गुरु कहता है, ''पकड़ धुन चल ऊपर।'' यहाँ पहुँचकर सेवक की ड्यूटी समाप्त हो जाती है आगे गुरु जाने और उसका काम। जिस तरह बच्चा स्कूल में जाता है उसे पढ़ाना उसकी देखभाल करना टीचर का काम है।

सही नाम पाया सतगुरु से। बिन सतगुरु सब जीव बही।।

जब तक हमें सन्त-सतगुरु नहीं मिलते तब तक हमें यह नहीं पता कि सही नाम कौन सा है? आमतौर पर हम अपनी-अपनी जुबानों में अपने-अपने समाजों में कोई उस परमात्मा को अल्लाह कोई राम कोई वाहेगुरु कोई राधास्वामी कहकर याद करता है।

महात्मा बताते हैं कि हम इन सब नामों की हिस्ट्री खोलकर देख सकते हैं कि कोई नाम सौ साल, कोई नाम पांच सौ साल तो कोई नाम चौदह सौ साल पुराना है। राम चन्द्र जी महाराज त्रेता युग में आए उनके जाने के बाद हम परमात्मा को राम लफ्ज़ के साथ याद कर रहे हैं। क्राईस्ट को आए हुए दो हजार साल हो गए हैं हम उस परमात्मा को गॉड कहकर याद करते हैं। मौहम्मद साहब को आए हुए चौदह सौ साल हो गए हैं हम उस परमात्मा को अल्लाह कहकर याद करते हैं। गुरु नानकदेव जी महाराज को पांच सौ साल हो गए हैं हम उस परमात्मा को वाहेगुरु लफ्ज़ से याद करते हैं। स्वामी जी महाराज को आए हुए सौ साल हो गए हैं हम उस परमात्मा को राधास्वामी कहकर याद करते हैं।

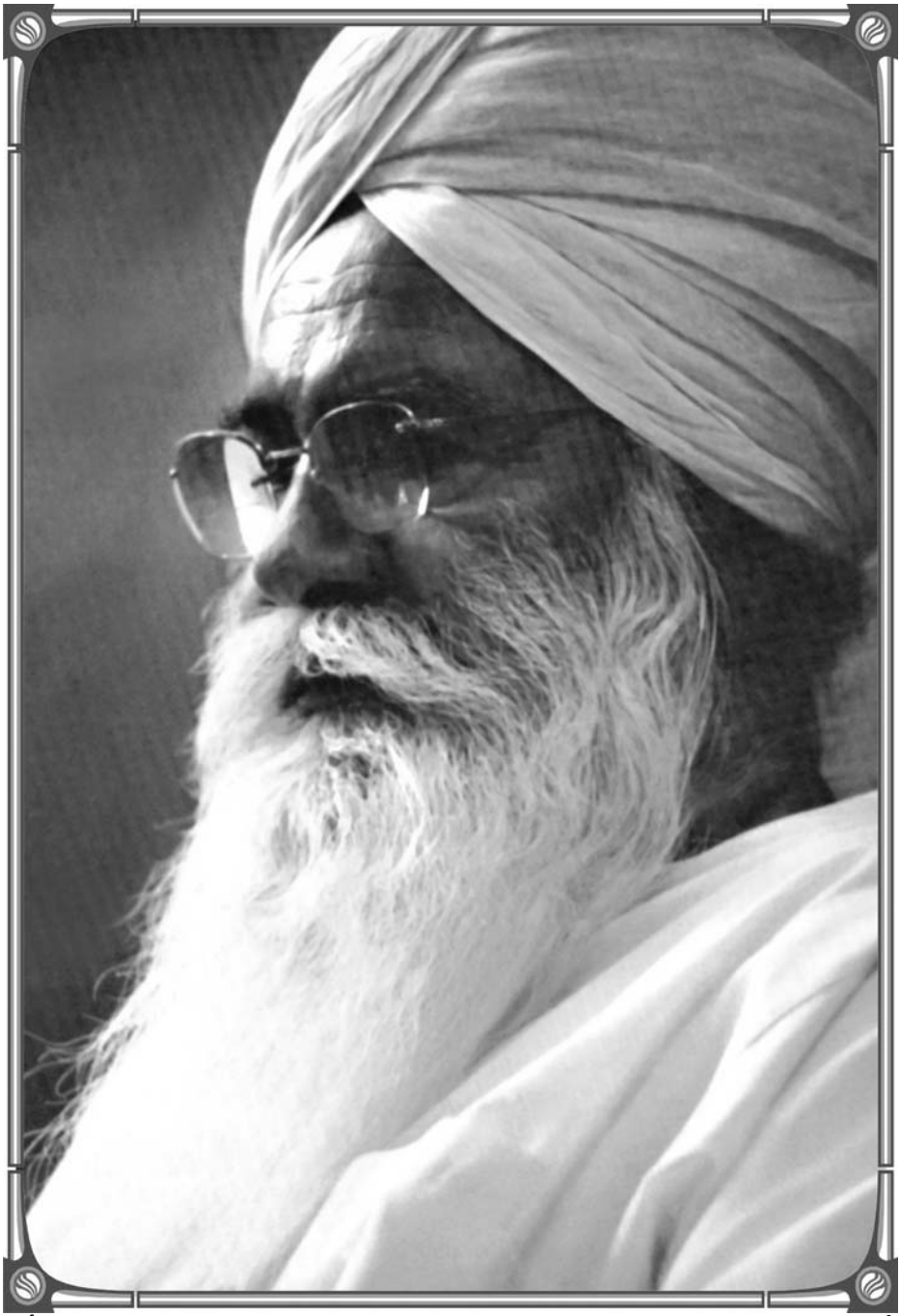

सही नाम लिखने, पढ़ने और बोलने में नहीं आता। हम हिस्ट्री में भी उस नाम की खोज नहीं कर सकते कि यह नाम पांच सौ साल या दो-तीन युग पुराना है। नाम ने दुनिया की रचना पैदा की है उस नाम के आधार पर ही खंड-ब्रह्मांड चल रहे हैं। सन्त हमें उस नाम के साथ जोड़ते हैं।

हज़रत बाहु कहते हैं, ''कलमा जिससे मुक्ति होनी है वह जुबान से पढ़ा नहीं जा सकता, होठ हिलते नहीं। आँख फड़कती नहीं। मुर्शिद उस नाम के साथ जोड़ता है।'' सन्त-सतगुरु सही नाम देते हैं, उस नाम ने दुनिया की रचना पैदा की है। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

उत्पत प्रलय शब्दे होवे, शब्दे ही फिर उत्पत होवे।

हम उस नाम को प्राप्त करके ही तृप्त हो सकते हैं। गुरु साहब कहते हैंः

नाम मिले मन तृप्तिए, बिन नामें धृग जीवास।

नाम से मिलकर हमें तृप्ति व शान्ति आती है। नाम के बिना हमारा जीवन धृग है, किसी लेखे में नहीं। गुरु साहब कहते हैंः

धृग धृग खाया धृग धृग कापड़ अंग चढ़ाया।

आप कहते हैं कि नाम के बिना आप जो पहनते और खाते हैं वह किसी लेखे में नहीं। गुरु साहब कहते हैंः

लेखे में सोई घड़ी बाकी के दिन बाद।

जिस दिन नाम मिल गया नाम से हमारी आत्मा जुड़ गई वही दिन लेखे में है। जिस तरह पशु-पक्षी दिन गुजार कर चले जाते हैं उसी तरह हम भी बाकी के दिन गुजारकर चले जाते हैं।

जीव पड़े चौरासी भरमें। खान पान मद मान लाई ।।

परमात्मा ने बहुत दया-मेहर करके हमें सारी योनियों का सरदार बनाकर भेजा है। गुरु साहब कहते हैं:

अवर योनि तेरी पनिहारी, इस धरती में तेरी सिकदारी।

इंसान की योनि सब योनियों में शिरोमणि योनि है। बड़े आदमी की जिम्मेवारी भी बड़ी होती है। हम परमात्मा की भक्ति परमात्मा के साथ मिलाप इंसान के जामें में ही कर सकते हैं। कुत्ते-बिल्ले, पशु-पक्षी भी खाते-पीते और गर्मी-सर्दी महसूस करते हैं। हम इंसान भी यह सब महसूस करते हैं। मौत-पैदाईश, पशु-पक्षियो और इंसानो को भी है।

अगर इंसान और पशु-पक्षियों में कोई फर्क है वह सिर्फ इतना ही है कि पशु-पक्षियों के जामें में हम परमात्मा के साथ मिलाप नहीं कर सकते परमात्मा की भक्ति नहीं कर सकते। पशु-पक्षियों के अंदर वह विवेक बुद्धि नहीं होती जो भले बुरे का विचार कर सके। इंसान को वह विवेक बुद्धि पैदा करनी चाहिए जो भले-बुरे का विचार कर सके; वह विचार 'शब्द-नाम' की कमाई है।

आप कहते हैं बड़ी-बड़ी कौमें और बड़े-बड़े डिक्टेटर इस संसार में आए आखिर में हाथ झाड़कर इस संसार से चले गए। हुजूर महाराज आमतौर पर महमूद गजनवी की हिस्ट्री सुनाया करते थे कि उसने हिन्दुस्तान पर 17-18 हमले किए। वह हिन्दुस्तान से बहुत माल लूटकर ले गया। जब उसका अंत समय आया तो उसने अपने अहलकारों से कहा, ''मैं जो कुछ हिन्दुस्तान से लूटकर लाया हूँ उसे एक जगह पर नुमाईश लगाकर रख दें मैं देख लूं वह कितना माल है।'' वह सारी नुमाईश देखकर दहाड़े मारकर रोया कि मैंने

इस धन के लिए लाखों औरतें विधवा की, लाखों बच्चे यतीम किए लेकिन आज इसमें से एक पाई भी मेरे साथ नहीं जा रही।

महमूद गजनवी ने कहा कि मैं आखिरी समय में जो हुक्म दे रहा हूँ उस पर सबने अमल करना है। मेरी हथेलियां नीचे की तरफ कर देनी है और हाथ कफन से बाहर कर देने हैं। मेरे साथ जो होगी वह तो मैं भुगतूंगा ही कम से कम और लोग यह शिक्षा प्राप्त कर लें कि महमूद गजनवी जब संसार से गया उस समय उसके दोनों हाथ खाली थे। मेरे पीछे यह नारा लगानाः

जुल्म साथ है खाली हाथ है।

हम दुनिया की मान-बड़ाई, धन-दौलत इकट्ठी करने के लिए अपना अमोलक हीरा इंसान का जामा खोकर चले जाते हैं।

मान मनी का रोग पसरिया। बड़े बने जिन मार सही।।

मान प्राप्त करने का रोग हर इंसान को लगा हुआ है कि मैं जहाँ जाऊं मेरा आदर ही आदर हो, सब लोग मुझे अच्छा ही अच्छा कहें। जो बड़े बने उन्होंने मार सही। हम रोज ही देखते हैं कि दुनिया की मान-बड़ाई क्या चीज़ है? जनता जब किसी को बड़ाई देना चाहती है उस समय कुछ नहीं देखती जुलूस निकालते हैं गले में फूलो के हार डालते हैं वाह! वाह! करते हैं और अखबारों में खबरें छापते हैं कि यह बहुत अच्छा है इसमें बहुत सारे गुण हैं।

फिर जब वक्त आता है हुकूमत हाथों से निकल जाती है जो लोग फूलों के हार डालते थे वे ईंटें मारते हैं, गालियां निकालते हैं और उन्हीं अखबारों में निन्दा होनी शुरू हो जाती है। महात्मा हमें प्यार से बताते हैं कि दुनिया की मान-बड़ाई तो लोग हमसे यहीं छीन लेते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

जब जरिए तब होय भस्म तन रहे किरम दल खाई।

चाहे इंसान मोटा है या पतला है इसे जला देते हैं तो राख बन जाती है अगर कब्र में दबा देते हैं तो वहाँ इसे कीड़े खा जाते हैं कबीर साहब कहते हैंः

माटी कहे कुम्हार को तू क्या रोंदे मोह।
इक दिन ऐसा आएगा मैं रोंदूगी तोह।।

कुम्हार मिट्टी के बर्तन बना रहा था मिट्टी ने उससे कहा कि तू रोज पानी डालकर मुझे गूँथता है, मेरे बर्तन बनाता है। क्या तूने कभी वह वक्त आँखों के आगे रखा है कि मैंने तुझे इसी तरह अपने अंदर समा लेना है। इसी तरह लुहार लकड़ी को जलाकर कोयले बना रहा था तो लकड़ी ने यह कहाः

लकड़ी कहे लुहार को क्या जारे तू मोह।
ईक दिन ऐसा आएगा मैं जारुंगी तोह।।

कभी सोचा! कोई वक्त आएगा मैं तुझे जलाकर अपनी तरह कोयला बना लूंगी। परमात्मा ने हमें बहुत कीमती इंसानी जामा दिया था लेकिन हम इस जामें को मान-बड़ाई की खातिर खोकर चले जाते हैं। हमें जिस मकसद के लिए यह जन्म मिला था हमने उस परमात्मा की भक्ति नहीं की।

छोटा रहे चित्त से अंतर। शब्द माहिं तब सुरत गई।।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जुबान से नम्रता दिखा लेनी धोखा है। हम 'शब्द-नाम' के साथ मिलकर ही छोटे बन सकते हैं।'' बड़े-बड़े कमाई वाले महात्मा इस संसार में आए उन्होंने यहाँ आकर कभी भी दम नहीं मारा।

मैंने बाबा सावन सिंह जी का जमाना अच्छी तरह देखा है अगर किसी ने आकर उनसे यह कहना कि आपने हमारा यह काम

किया, हमारी संभाल की तो आप कहते, ''हाँ! यह हमारे बाबा जी की मेहरबानी है, यह सब कुछ बाबा जी ही कर रहे हैं।'' सन्त अपने आपको क्रेडिट नहीं देते।

एक औरत के दो बच्चे थे। एक बच्चा दो साल का था और दूसरा बच्चा अभी माँ का दूध ही पी रहा था। आपको पता ही है कि कलयुग में बच्चे जल्दी-जल्दी पैदा होते हैं। वह औरत ध्यान में बैठी थी, उसे नाम मिला हुआ था। बाबा जयमल सिंह जी उसके पास से निकले कि इस औरत को गृहस्थ का कितना कष्ट है, एक बच्चा बहुत ही छोटा है। पता नहीं इन बच्चों ने किस समय रोने लग जाना है और किस समय क्या मांग लेना है? फिर भी यह औरत सतगुरु भक्ति करने में लगी हुई है। बाबा जयमल सिंह जी ने उस औरत को माथा टेका कि यह धन्य है। किसी ने पूछा कि बाबा जी आप यह क्या कर रहे थे? आपने कहा कि सन्तों के दिल में नाम की कमाई करने वालों की बहुत इज्ज़त है। दूसरे को क्या पता है कि यह क्या कर रहा है?

हम बाबा जयमल सिंह जी को कुलमालिक समझते हैं। वह कुलमालिक हैं इसमे कोई शक नहीं फिर भी आपने एक भजन करने वाली औरत के पैरों में माथा टेका। उस औरत को पता नहीं था क्योंकि वह ध्यान में बैठी थी। इसका नाम है छोटा रहे। सन्त-महात्मा सब कुछ होकर भी छोटे बनकर रहते हैं।

शब्द बिना सारा जग अंधा। बिन सतगुरु सब भर्म मई।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''किस बंदे का नाम लें कि वह सुजाखा है। चाहे वह किसी भी समाज में पैदा हुआ अगर उसे गुरु नहीं मिला शब्द-नाम नहीं मिला तो आँखे होने के बावजूद भी वह

अंधा है। उसका भ्रम ही नहीं निकलता कि मैं कहाँ से आया हूँ और मुझे क्या करना चाहिए?'' गुरु अंगददेव जी महाराज कहते हैंः

माया धारी अंधा बोला शब्द न सुणे बहो रोल घचोला।

अंदर शब्द है हम उसे सुन नहीं सकते। अंदर प्रकाश है हम उसे देख नहीं सकते। आँखें होने के बावजूद हम अंधे हैं, कान होने के बावजूद हम बहरे हैं।

शब्द भेद और शब्द कमाई। जिन जिन कीन्ही सार लई।।

अब स्वामी जी महाराज कह रहे हैं, ''प्यारयो! जिन्होंने शब्द-नाम लेकर कमाई की उन्होंने ही अंदर जाकर सच्चाई को देखा और होका दिया।''

मुझे कई बार संसार में जाने का मौका मिला है। मैंने सदा ही यह बात कही है कि जिसने सन्तमत में कमाई की जो अंदर गया है उसने आज तक इसे झुठलाया नहीं बल्कि सच बयान किया है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे अगर हम डॉक्टर से दवाई लाकर अलमारी में रख दें दवाई न खाएं या डाक्टर के कहे मुताबिक परहेज न रखें तो क्या वह दवाई फायदा करेगी? बेशक हम डाक्टर को गालियां दें लेकिन इसमें डाक्टर का क्या कसूर है? इसी तरह हमारी यह हालत है कि हम नाम लेकर न काम छोड़ते हैं न क्रोध छोड़ते हैं न कोई ऐब छोड़ने के लिए ही तैयार हैं फिर कहते हैं कि हमें नाम लिए हुए इतने साल हो गए हैं लेकिन हमारा पर्दा नहीं खुला। सोचकर देखें! क्या हमने गुरु के कहे हुए उपदेश का पालन किया? जिन्होंने शब्द-नाम प्राप्त करके कमाई की उन्होंने उससे फायदा उठा लिया।

शब्द रता सतगुरु पहिचानों। हम यह पूरा पता दई।।

जिस महात्मा ने अपने जीवन काल में शब्द-नाम की कमाई की। तन से संघर्ष करके अपनी आत्मा को निकाला, गुरु की दया प्राप्त की वही महात्मा आपको तार सकता है। महात्माओं ने अपनी बानियों में जिक्र किया है कि आप अंधे के पीछे न लगें।

गुरु जिन्हां का अंधला सिख भी अंधे कर्म करेण।
ओह भाणे चलण आपणे नित झूठो झूठ बुलेण।।
अंधे दा राह दस्या अंधा होय सुजाय।
होय सुजाखा नानका सो क्यों औजड़ जाय।।

अंधे के बताए रास्ते पर अंधा ही जाएगा। सुजाखा किस तरह उस रास्ते पर जाएगा? आप किसी महात्मा की शरण में जाने से पहले उसकी हिस्ट्री पढ़ें क्या उसने दस-बीस साल कोई कमाई की, पिंड को छोड़कर ब्रह्मांड पर चढ़ा? मैं बताया करता हूँ कि सोते हुए कभी भी किसी का पर्दा नहीं खुल सकता बेशक वह कितनी भी पार्टियां क्यों न बना ले, लोगों को अपने पीछे लगा ले। यह रंग चार दिन का होता है। कबीर साहब कहते हैं:

सुखिया सब संसार है खाए और सोए।
दुखिया दास कबीर है जागे और रोए।।

अगर बिना कमाई किए ही पर्दा खुल जाए तो सारी दुनिया ही महात्मा बन जाए। यह जिंदगी का सवाल है आप सबसे पहले देखें कि इसने कोई कमाई की है, कभी पिंड को छोड़कर ब्रह्मांड पर चढ़ा है। महात्मा कभी नहीं कहते कि आप अंधे के पीछे लग जाएं। आपका भला शब्द रूपी अभ्यासी महात्मा ही कर सकता है।

खोलो आँख निकट ही देखो। अब क्या खोलूँ खोल कही।।

शब्द स्वरूपी अभ्यासी महात्मा यह नहीं कहते कि परमात्मा समुद्र की तह में सोया हुआ है या पहाड़ की चोटी पर बैठा है। वे

कहते हैं कि तेरा परमात्मा तेरे अंदर बैठा है, तू अपने ख्याल को बाहर से हटाकर अंदर देख तो सही! महात्मा इससे ज्यादा और क्या जानकारी दे सकते हैं क्योंकि सबसे ज्यादा नज़दीक हमारा जिस्म ही है। परमात्मा इस जिस्म के अंदर बैठा है, यह सच्चा मंदिर है। वे हमें बाहर से हटाकर अंदर जोड़ते हैं।

आगे भाग तुम्हारा प्यारी। नहिं परखो तो जून रही।।

अब आप प्यार से कहते हैं, ''आगे हमारे भाग्य का सवाल है। महात्मा आकर अपना आप नहीं छिपाते वे होका देते हैं चलो ऊपर! अगर हम नहीं परखते तो इसमें हमारी अपनी गलती है।''

महाराज सावन सिंह जी से कुछ प्रेमियों ने कहा कि सन्तों को अपनी कोई न कोई निशानी रखनी चाहिए? महाराज जी ने कहा, ''सन्त आगे बोर्ड लगाकर रखें कि हम पूरे हैं, क्या यह दुनिया दम मारने की है?'' आप अंदर जाकर कमाई करके देखें! किसी पेड़ का फल खाने से ही उसकी मिठास का पता लगता है।

कहना था सोई कह डाला। राधास्वामी खूब कही।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''हमने आपसे जो कहना था कह दिया है। अब आपका फर्ज बनता है कि शब्द नाम की कमाई करके अंदर जाएं और सच्चाई को खुद आँखों से देखें।''

स्वामी जी महाराज ने हमें इस छोटे से शब्द में बहुत प्यार से समझाया कि सबसे पहले सतगुरु की शरण में जाएं। सतगुरु के बिना नाम नहीं मिलता और नाम के बिना मुक्ति नहीं। सन्त-सतगुरु हमें नज़दीक से नज़दीक इस जिस्म के अंदर परमात्मा की जानकारी देते हैं।

***

4 जुलाई 1987

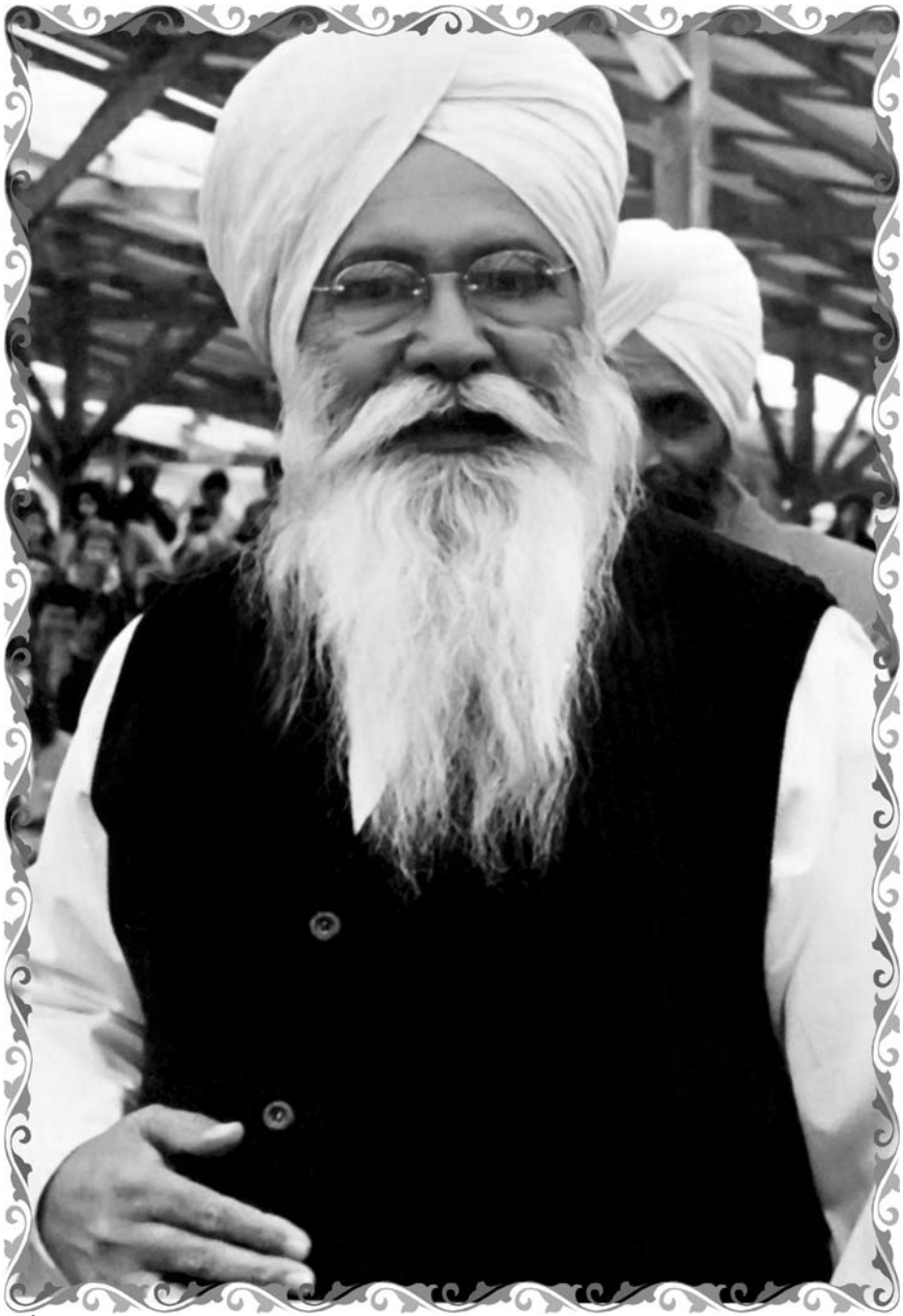

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले संदेश

अमृतवेला

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने गरीब आत्मा पर दया की, अपनी भक्ति का दान दिया और भक्ति करने का मौका दिया। मैं सदा ही कहा करता हूँ कि भक्ति अमोलक धन है हम इसे न खेतों में उगा सकते हैं न धन से प्राप्त कर सकते हैं और न ही इसे हुकूमत से प्राप्त कर सकते हैं।

भक्ति को प्राप्त करने का एक ही जरिया परमात्मा की दया है। जब उसकी दया होती है तो परमात्मा हमें इंसान का जामा बख्शता है फिर दया करता है तो हमारा मिलाप पूर्ण गुरु के साथ करवाता है। जब पूर्ण गुरु दया करता है तो उसकी दया का अंदाजा नहीं लगा सकते कि वह कितनी दया करता है, जब हम उसकी दया को समझकर उसके बताए हुए रास्ते पर चलते हैं फिर हमें खुद ही पता लग जाता है कि वाक्य ही यह भक्ति अमोलक धन है। भक्ति सच्चे सुख और सच्ची इज्जत की दाता है; भक्ति काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की नाशक है।

परमात्मा के भक्त परमात्मा से बड़े नहीं होते पर उन्होंने प्यार से परमात्मा को अपने ऊपर खुश किया होता है। प्यारा बच्चा पिता से जो चाहे करवा लेता है। प्यारा बच्चा तभी बनता है जब वह अपने पिता की आज्ञा का पालन करता है। भजन-सिमरन करना किसी पर अहसान करना नहीं है सिर्फ अपने ऊपर दया करना है।

गुरु ने दया की, भक्ति का दान दिया। जब हम अपने ऊपर दया करते हैं उसके बताए रास्ते पर चलते हैं। आप सोचकर देखे; यहाँ के प्रेमी आपको समय-समय पर चेतावनी देते हैं कि आप

इधर-उधर न घूमें। अभ्यास में बैठें सतसंग को विचारें या अपना सिमरन करें लेकिन हम उनकी बात नहीं सुनते ज्यादातर इधर-उधर की बातें करके ही चले जाते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''प्रेमी हमें लंगर से खाना खाने के लिए देते हैं, हमारी हर तरह की देखभाल करते हैं। क्या हमारी जिम्मेवारी नहीं कि हम भजन-सिमरन करें? हमारे भजन-सिमरन करने से सेवा करने वालों को भी कुछ न कुछ लाभ मिले। हम जिस काम के लिए यहाँ आए हैं हमें उसका लाभ मिले।'' मेरी जिंदगी का तजुर्बा कमाई है। अभी प्रेमी शब्द गा रहे थेः

ठंड आत्मा किसे न पाई गौंदे फिरे जुबानी।

प्यारेयो! ये बेर नहीं कि माँगने से मिल जाएंगे। अपना आप गुरु के हुक्म पर न्यौछावर करना पड़ता है। गुरु जो कहता है सबसे पहले वह करना पड़ता है। मैं बताया करता हूँ कि मुझे आज्ञा पालन करने का तजुर्बा आर्मी में हुआ। आर्मी का यह कानून होता था कि पहले खाना तैयार करो यह शिकायत बाद में करो कि आटा, दाल और लकड़ी कहाँ से मिलेगी? मैं इसी बात को लेकर सन्तमत में चला।

बाबा बिशनदास जी ने मेरी जिंदगी बनाई, मुझे 'दो-शब्द' का भेद दिया। आपने जो कहा मैंने वह तन-मन से किया। जब परमात्मा कृपाल आए उस समय जो कुछ आपने कहा मैं आपकी दया से वह कर सका क्योंकि मैं वह इंसान नहीं था जो आगे-पीछे भागने में या बातें करने में यकीन करता हो। हम गुरु से क्या बातें कर सकते हैं? हम शीशे के आगे खड़े होकर यह बड़ाई करें कि हम इतने सुंदर हैं, हम जो हैं शीशा तो वही दिखाएगा। हमने सबसे पहले गुरु की आज्ञा का पालन करना है।

जब परमात्मा कृपाल मेरे घर आए उससे एक दिन पहले मेरे कुछ रिश्तेदार आए बिरादरी में शादी थी। आपको पता है कि शादी वाले लोग अपनी कितनी जरूरतें रखते हैं। सबसे पहले तो उन्होंने घर के आंगन में खड़े होकर खूब सतनाम-सतनाम गाया। मैंने उनसे कहा कि आगे आ जाओ आपको क्या चाहिए?

मैं जब से साधु बना हूँ मैंने रिश्तेदारियों में जाने की कोशिश नहीं की अगर कोई आया तो मैंने उससे इतनी ही बात की जो भक्ति मार्ग में जायज है। मैंने सदा गुरु नानकदेव जी महाराज के वाक को याद रखाः

भक्तां ते संसारियां दा जोड़ कदे न आया।

भक्तों और संसारियों का मेल नहीं बनता। उन रिश्तेदारों ने चार-पांच घंटे में अपनी जरूरतें मेरे सामने रखी, मैं चुप रहा। इतने में महाराज कृपाल का संदेश आया कि घर में रहना आज मैंने आना है। आप अंदाजा लगा लें कि किसने उन्हें मेरा नाम बताया? इससे पहले मुझे न कोई उनकी बड़ाई करने वाला मिला था और न निन्दा करने वाला ही मिला था।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सन्त गरीब नवाज होते हैं कोई गरीब बने वे जरूर दया करते हैं। सन्त अंतर्यामी होते हैं लेकिन सेवक का पर्दाफाश नहीं करते बल्कि सेवक से कहते हैं कि तू अच्छा है।'' जब हम उनके मुँह से यह सुनते हैं तो हम अच्छा बनने की कोशिश करते हैं। हम इतने पाप करते हैं फिर भी हमारा गुरु कहता है कि तू अच्छा है। आपके समझाने का तरीका ऐसा था कि आप बात किसी से कहते थे लेकिन पास खड़ा हुआ दूसरा आदमी काँपता था।

जब महाराज कृपाल आए तो आपने सबसे पहले यह पूछा, ''हाँ भाई! तेरे भजन का क्या हाल है?'' मैंने अपनी जिंदगी में खूब भजन-अभ्यास किया। मेरी जिंदगी का यह पहला ही वाक्या था कि जब किसी ने मुझसे पूछा कि बता तेरे भजन का क्या हाल है? मुझे कविता बोलने की आदत थी। मैंने आपको बड़े प्यार से कहाः

आए लक्खां ही परौणें पर ऐसा कोई आया ना।
आपों आप सब दस्सी किसे भजन कराया ना।
गोंदे तुर गए सब आपदे ही गौंणे।
भाग जागे साडे वीरनों साडे आए ने सन्त परौणें।।

जो भी आया वह अपने-अपने गाने गाकर चला गया लेकिन जो मैं गाना चाहता हूँ वह भाग्य से ही मिलता है।

ठंड आत्मा किसे ना पाई गौंदे रहे जुबानी।
अजायब कृपाल बिना कौंण सी विचारेया।।

उसने दया की, दया करने वाला सदा ही तैयार है लेकिन मसला हमारे बर्तन का है! उस दयालु सावन-कृपाल की क्या महिमा

बयान करें जिन्होंने हमें अमोलक भक्ति का धन बख्शा है। भक्ति सच्चे सुख, सच्ची इज्जत की दाता है। फरीद साहब कहते हैंः

उठ फरीदा सुत्तयां झाड़ू दे मसीत।
तू सुत्ता रब जागदा तेरी डाढ़ी केही प्रीत।।

हम दुनिया की तरफ से जाग रहे हैं परमात्मा की तरफ से सोए हुए हैं। सब सन्तों ने यही उपदेश दिया है कि उठो जागो! सबसे सच्ची मस्जिद, मंदिर, ठाकुरद्वारा हमारा शरीर है। हम बाहर के मंदिर, मस्जिद और ठाकुरद्वारों की इज्जत करते हैं क्योंकि ये हमने अपने हाथों से बनाए हैं। हम इनमें धूप जलाते हैं, यहाँ कोई बुरा कर्म नहीं करते लेकिन जिस मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे में हम बैठे हैं यह खुद परमात्मा ने बनाया है इसमें सिमरन का झाड़ू देने की जरूरत है। हमारी आत्मा के ऊपर भी विषय-विकारों के कूड़ा-करकट की मैल चढ़ी हुई है, सिमरन झाड़ू का काम करता है। फरीद साहब कहते हैंः

हौं बलिहारी पंखियां, जंगल जिन्हां वास।
कंकर चुगन थल वसन, रब न छड्डन पास।।

जंगल में जानवर, पक्षी रहते हैं जिन्हें खाने को अच्छा खाना नहीं मिलता उनके पास रहने के लिए अच्छे मकान अच्छे बिस्तर नहीं फिर भी वे इंसानों से पहले उठते हैं। ये अपनी-अपनी जुबान में परमात्मा को याद करते हैं लेकिन हम सोए हुए हैं। इंसान अच्छे-अच्छे मकानों में रहता है, अच्छे-अच्छे मेवे खाता है। इंसान की जिम्मेवारी है कि वह परमात्मा का धन्यवाद करे।

जैसे मैंने कल बताया था कि अभ्यास में बैठने से पहले पाँच पवित्र नामों को याद करें। अभ्यास को बोझ न समझें, प्रेम-प्यार से करें। जब यहाँ आवाज दी जाए तभी आँखें खोलें।

29.09.1995

***

धन्य अजायब

16 पी. एस. राजस्थान आश्रम में सतसंग का कार्यक्रम

31 मार्च 1 व 2 अप्रैल 2016

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया–मेहर से हर साल की तरह इस साल भी दिल्ली में मई 2016 को नीचे लिखे पते पर सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। सभी प्रेमी भाई–बहनों से प्रार्थना है कि नीचे लिखे फोन नम्बरों से सतसंग के कार्यक्रम की जानकारी लें।

कम्युनिटी हाल, भेरा इन्कलेव, पश्चिम विहार
(नज़दीक पीरागढ़ी चौक)नई दिल्ली - 110 087

राकेश शर्मा – 9810212138 सोनू सिंह – 9810794597 सुरेश चोपड़ा – 9818201999